Edit with WPS Office

प्रायश्चित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1• रामू की बहू और कबरी बिल्ली का आपसी संबंध कैसा था ?

उत्तर - रामू की बहू कबरी बिल्ली से बहुत नफरत करती थी। कबरी ने उसका जीना दुभर कर दिया था।वह जो कुछ भी रामू के लिए बनाती ,कबरी उसे चट कर जाती।अंत में उसने कबरी को मारने का निश्चय किया ।

प्रश्न 2• महरी पंडित परमसुख को क्यों बुलाकर लाई ?

उत्तर - रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या कर दी थी । उसे कौन - सा पाप लगा है और उससे बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए ,यह सब जानने के लिए रामू की सास के कहने पर महरी पंडित परमसुख को बुलाकर लाई ।

प्रश्न 3• प्रायश्चित के लिए पंडित जी ने क्या - क्या उपाय बताए ?

उत्तर - पंडित परमसुख ने प्रायश्चित के लिए कई उपाय बताए ।सबसे पहले इक्कीस तोले सोने की बिल्ली ,दस मन गेहूँ ,एक मन जौ , पाँच मन चना , चार पसेरी घी और मन भर नमक दान करना होगा । इसके अलावा इक्कीस दिन का पाठ और दो समय तक पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा ।

प्रश्न 4 • अंत में महरी ने क्या सूचना दी ?

उत्तर - अंत में महरी ने सूचना दी कि बिल्ली उठकर भाग गई ।

अतिरिक्त प्रश्न

प्रश्न 1• रामू की बहू ने कबरी को मारने का निश्चय क्यों किया ?

उत्तर - कबरी बिल्ली ने रामू की बहू का जीना मुश्किल कर दिया था।वह रामू के लिए जो कुछ भी बनाती , कबरी उसे चट कर जाती ।रामू की बहू को सास की झिड़कियाँ सुनने को मिलती और रामू को रूखा- सूखा भोजन मिलता था ।इससे उसने कबरी को मारने का निश्चय कर लिया ।

Edit with WPS Office

प्रश्न 2• रामू की बहू ने कबरी को किस प्रकार मारा ?

उत्तर - रामं की बहू ने घर की चौखट पर एक कटोरा दूध भरकर रख दिया और चली गई ।फिर एक पाटा लेकर आई और देखा तो कबरी दूध पी रही थी ।उसने पूरे जोर से पाटा बिल्ली पर पटक दिया ।

प्रश्न 3• प्रायश्चित कहानी के कहानीकार कौन हैं ?

उत्तर - प्रायश्चित कहानी के कहानीकार भगवतीचरण वर्मा हैं।

प्रश्न 4• पंडित परमसुख कहाँ के रहने वाले थे ?

उत्तर - पंडित परमसुख मथुरा के रहने वाले थे ।

प्रश्न 5• अंत में कितने तोले की बिल्ली पर बात निश्चित हुई ?

उत्तर - अंत में ग्यारह तोले की बिल्ली पर बात निश्चित हुई ।

प्रश्न 6 'प्रायश्चित' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर - 'प्रायश्चित ' कहानी भगवतीचरण वर्मा के द्वारा लिखित है । इस कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में फैले अंधविश्वास पर व्यंग्य किया है । मनुष्य के जीवन में गलती का होना स्वाभाविक है ।भविष्य में वह फिर से न हो , इसका ध्यान रखना चाहिए ।

रामू की बहू कबरी बिल्ली से बहुत परेशान हो जाती है और अंत में उसे पाटा पटककर मारती है । कबरी तेज चोट के कारण उल्टा पड़ी रही।लोगों ने उसे मरा समझ लिया ।रामू की बहू पर बिल्ली की हत्या का पाप चढ़ गया ।उसकी सास ने महरी से पंडित परमसुख जी को बुलवाया । पंडित जी ने सब सुनकर, पत्रा देखकर निर्णय दिया कि बहू को कुंभीपाक नरक मिलेगा । इसलिए उससे बचने के लिए बहू को प्रायश्चित करना पड़ेगा ।बहू के हाथों इक्कीस तोले सोने की बिल्ली बनवाकर दान करनी होगी । इसके बाद मोल- तोल शुरू

Edit with WPS Office

हुआ और ग्यारह तोले पर बात बनी ।फिर पंडित जी ने बताया कि इक्कीस दिन तक पाठ और दोनों समय पाँच ब्राह्मणों को भोजन कराना होगा ।दान के लिए दस मन गेहूँ , एक मन जौ, पाँच मन चना, चार पसेरी घी और मन भर नमक बताया ।। पंडित जी की बात सुनकर रामू की माँ आनाकानी करने लगी ,किंतु बगल में बैठी किसनू की माँ ,मिसरानी तथा छुन्नू की दादी ने पंडित जी का ही समर्थन किया ।अंत में रामू की माँ ने सब कुछ स्वीकार कर लिया ।

पंडित जी ने रामू की माँ से ग्यारह तोला सोना माँगा ताकि वह बिल्ली बनवाकर ले आएँ।साथ ही प्रायश्चित का प्रबंध करने को कहा। वे अपनी बात पूरी कर भी न पाएँ थे कि महरी हाँफती हुई आई और बताया कि बिल्ली उठकर भाग गई ।